(1)

S.S. College, Jehanabad
Class :- B.A. Part II (Hons.)
Subject :- Psychology Paper - IV
(Systems of Psychology)
Teacher's Name - Dr Viveka Nand Sharma
e-content for two days | Date - 26.04.2021
27.04.2021

Topic :- Behaviorism - Watson

Contribution of John Broadus Watson

मनोविज्ञान के विकास में John Broadus Watson (1878-1958) एक प्रसिद्ध पैदा करी थे इन्होंने के लगातार 1913 ई० में मनोविज्ञान के एक नये सम्प्रदाय व्यवहारवाद की स्थापना की। इन्होंने 1913 ई० में 'Psychology as the behaviourist sees it' नामक लेख प्रकाशित किया जिसमें इन्होंने व्यवहारवाद का समर्थन किया था और इनका व्यवहारवाद संरचनावाद एवं प्रकार्यवाद के विरुद्ध एक विद्रोहात्मक सम्प्रदाय के रूप में स्थापित हुआ। व्यवहारवाद का जन्म मुख्य रूप से तीन प्रवृत्तियों के कारण हुआ - संरचनावाद, प्रकार्यवाद एवं पशुमनोविज्ञान।

Watson ने मनोविज्ञान को एक विशुद्ध प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया और इन्होंने मनोविज्ञान की पद्धतियों को एक विशुद्ध वैज्ञानिक पद्धति बनाने का प्रयास किया। इन्होंने संरचनावाद के चेतना सम्बन्धी विचारों को स्वीकार नहीं किया

Watson का जन्म 1878 ई० में South Carolina में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव से लेने के बाद इन्होंने Furman university से 1900 ई० में

papergrid

में एम० ए० की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने शिकागो विश्व-विद्यालय में John Dewey के शिष्य हुए। बाद में इन्होंने तंत्रिका विज्ञान की शिक्षा Jacques Loeb से प्राप्त की उसके बाद पशु शिक्षा पर प्रायोगिक अपने शोध-पत्र के आधार पर 1903 ई० में Ph.D. की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने शिकागो विश्वविद्यालय में ही पशु अध्ययनों से प्रायोगिक कार्य शोध किए। 1908 ई० में Watson John Hopkins university में मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष हो गए। इन्होंने 1912 ई० में Cattell के निमंत्रण पर Columbia university में एक व्याख्यान-देने गए। जिसमें इन्होंने संरचनावाद एवं प्रकार्यवाद की कटु आलोचना की और व्यवहारवाद का स्पष्ट प्रचार किया। इन्होंने अपने विचारों को 1913 ई० में Psychological Review में एक निबंध जो था- 'Psychology as the Behaviorist Views it' के नाम प्रकाशित किया गया। यहीं से व्यवहारवाद का औपचारिक शुभारम्भ माना जाता है जिसे मनोविज्ञान में सामान्यतः व्यवहारवादियों का घोषणा पत्र (Manifesto) कहा जाता है। 1914 ई० में Watson की एक अन्य पुस्तक "Behaviour: An Introduction to comparative Psychology" प्रकाशित हुई। 1915 ई० में वे 'Americal Psychological Association' के अध्यक्ष हुए। बाद में वे सैनिक सेवा में चले गए। लेकिन सैनिक सेवा में बहुत दिनों तक नहीं रहे और उन्होंने पुनः पशुओं एवं बच्चों पर प्रयोगात्मक अध्ययन प्रारम्भ किया। इस बाद Watson ने अपने अध्ययनों के आधार पर 1919 ई० में अपनी एक दूसरी पुस्तक 'Psychology from the standpoint of a behaviorist" प्रकाशित की। 1924 तथा 1929 में इस पुस्तक का पुनः संशोधित प्रकाशित हुआ।

Watson ने मनोविज्ञान का जो प्रारूप प्रस्तुत किया उसे वातावरणवादी व्यवहारवाद या वातावरणवाद कहा जाता है। Watson का व्यवहारवाद मुख्य रूप से प्रयोगात्मक अध्ययनों पर आधारित रहा है। इन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा कि व्यवहारवादियों के दृष्टिकोण से मनोविज्ञान प्राकृत विज्ञान की एक प्रयोगात्मक वस्तुनिष्ठ शाखा है जिसका मुख्य उद्देश्य व्यवहारों का नियंत्रण एवं उसकी भविष्यवाणी करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए Introspection को एक विधि के रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता है क्योंकि अन्तर्दर्शन विधि से प्राप्त आंकड़ों एवं निष्कर्षों को वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता है। अब समय आ गया है कि हमें चेतना सम्बन्धी सभी विचारों को छोड़ देना चाहिए। Woodworth ने व्यवहारवादियों के बारे में यह कहा कि वे भिन्न-भिन्न बातों को नहीं मानते हैं। वे मन को नहीं मानते हैं, चेतना के विषय में बात नहीं करना चाहते और यह कहते कि अन्तर्दर्शन करना बन्द कर देना चाहिए। मानसिक घटनाओं का स्थान और मस्तिष्क में क्या चल रहा है, इसके सम्बन्ध में विचार करने की आवश्यकता नहीं है। उस समय Watson के विचार संरचनावादियों एवं प्रकार्यवादियों के विरुद्ध थी इसलिए इसे नकारात्मक विचारों को लोगों ने सा-मान्य स्वीकार कर लिया।

Watson ने मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा कि मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की एक शाखा है जो मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। इन्होंने व्यवहार की व्याख्या करते हुए कहा कि व्यवहार के अन्तर्गत शारीरिक अभिक्रियाएँ द्वारा कुछ करना या बोलना सभी सम्मिलित होते हैं। इन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि मनोविज्ञान का विषय-वस्तु चेतना, मानसिक कार्य और

मनोदैहिक प्रक्रियाएं नहीं हो सकती है। इनका कहना है मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान न होकर व्यवहार का विज्ञान है। मनोविज्ञान के विषय-विस्तार के बारे में इन्होंने कहा कि मनोविज्ञान में मानव तथा पशु व्यवहार दोनों का अध्ययन होता है। पशु व्यवहार का अध्ययन अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि मानव व्यवहार पशु व्यवहार से प्रभावित होता है। मनोविज्ञान के अध्ययन-विधियों के बारे में इन्होंने बताया कि इनका अध्ययन केवल वस्तुनिष्ठ विधियों से ही करना चाहिए और अन्तर्दर्शन को बिल्कुल ही छोड़ देना चाहिए। मनोविज्ञान में विषय-वस्तु के अध्ययन के लिए प्रमुख रूप से प्रयोगात्मक एवं निरीक्षण विधि का उपयोग किया। इसके साथ ही इन्होंने मानव प्राणियों के लिए शाब्दिक प्रतिवेदन (Verbal report) का भी प्रयोग किया। इस विधि में प्राणी अपने performance के बारे में एक प्रतिवेदन देता है और व्यवहारवादी इस प्रतिवेदन के आधार पर उस व्यक्ति या प्राणी का अध्ययन करते हैं। इस तरह Watson ने अपने व्यवहारवाद में मनोविज्ञान के परम्परागत विधियों सिद्धान्तों एवं सम्प्रत्ययों की कटु आलोचना की है और अपने योगदानों के आधार पर मनोविज्ञान के क्षेत्र में आमूल परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में Watson के प्रमुख योगदान निम्नांकित हैं

(1) व्यवहारवाद की अभिधारणाएं (Postulates of behaviourism):— Watson ने अपने व्यवहारवाद में मनोविज्ञान के लिए कुछ विशेष पूर्वकल्पनाएँ की हैं। इन पूर्वकल्पनाओं को ही अभिधारणाएं कहा जाता है जो निम्नांकित प्रकार हैं —

(a) व्यवहार मुख्य रूप से ग्रन्थियों के स्राव तथा पेशियों (मांसपेशियों) क्रियाओं से निर्मित होता है। इस

इस व्यवहारों का दैहिक रासायनिक प्रक्रियाओं के रूप में मापन किया जा सकता है।

(b) अनुक्रिया तत्वों के मिलने से व्यवहार का निर्माण होता है और वस्तुनिष्ठ वैज्ञानिक विधियों द्वारा व्यवहार का विश्लेषण करके इन क्रिया तत्वों का पता लगाया जा सकता है।

(c) जब उद्दीपन में परिवर्तन होता रहता है तो प्राणी उसके प्रति आवश्यक अनुक्रिया करता है। अतः व्यवहारवाद में व्यवहार का एक निश्चित कारण तथा पूर्णतः नियतवाद होते हैं।

(d) Watson ने हमेशा वस्तुनिष्ठ आँकड़ों पर ही जोर दिया है। उनका कहना है कि जो व्यवहार किसी विशेष समय एवं स्थान में घटित होते हैं और जो प्रशिक्षित एवं योग्य व्यक्तियों के वस्तुनिष्ठ प्रतिवेदन पर आधारित होते हैं वे ही मुख्य आँकड़े होते हैं और इसी ही आँकड़ों का मनोवैज्ञानिकों द्वारा विश्लेषण किया जाना चाहिए।

(2) सम्बन्धन का नियम (Principles of Connection):- Watson ने अपने व्यवहारवाद में बारम्बारता का नियम तथा नवीनता का नियम को सम्बन्धन नियम के रूप में स्वीकार किया। इन्होंने बाद में Pavlov द्वारा प्रतिपादित अनुबन्धन के नियम को भी महत्वपूर्ण माना। लेकिन इन्होंने अपने सम्बन्धन के नियम में Thorndike के प्रभाव नियम को सम्मिलित नहीं किया क्योंकि Watson इसे एक आत्मनिष्ठ नियम मानते हैं।

(3) चयन का नियम (Principles of Selection):- व्यवहारवाद का एक मुख्य उद्देश्य अनुक्रिया के बारे में पूर्वकथन करना है और यह पूर्वकथन करना उद्दीपन के चयनात्मक प्रक्रिया द्वारा संभव हो पाता है। किसी समय विशेष में प्राणी को एक ही साथ

तरह प्रकार के उद्दीपन उत्पन्न करते हैं। लेकिन उनमें से वह कुछ उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया करता है और कुछ के प्रति अनुक्रिया नहीं करता है। Watson का विचार था कि प्राणी ऐसे उद्दीपनों का चयन अपनी जन्मजात प्रवृत्तियों के आधार पर करता है और सीखी गई प्रवृत्तियों के आधार पर किसी खास उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया करता। अतः उद्दीपन-अनुक्रिया सम्बन्धों तथा अनुबन्धन के नियमों पर भी निर्भर करता है।

(4) मन-शरीर समस्या (mind-body problem) :- मन-शरीर सम्बन्धों पर मनोविज्ञान के उत्पत्ति ही मनोविज्ञान के अन्तर्गत प्रारम्भ से ही विवाद चला आ रहा है। Watson ने मन-शरीर समस्या से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्राणी में केवल शरीर होता है, मन नहीं होता है। इनका कहना है कि चेतन एक ऐसी चीज है जिसे प्राणी न तो कभी देखता है, न स्पर्श करता है, न सुनता है और न ही स्वाद लेता है। यह एक ऐसी पूर्वकल्पना है जिसकी कोई जरूरत नहीं है। इस तरह Watson अरस्तू द्वारा स्वीकार किये गए मन शरीर के द्वैतवाद (dualism) को अस्वीकार कर दिया। इस तरह मन के अस्तित्व को नकार देने के बाद Watson के व्यवहारवाद के लिए मन शरीर समस्या कोई समस्या ही नहीं रह गई। व्यवहारवादियों के लिए केवल प्राणी की शारीरिक अनुक्रियाएँ विशेषकर वे उद्दीपन के प्रति शारीरिक एवं मांसपेशियों की क्रियाएँ महत्वपूर्ण होती हैं। Watson ने स्पष्ट रूप से यह बतला दिया कि एक व्यवहारवादी के लिए ~~[illegible]~~ मानसिक अनुक्रियाएँ महत्वपूर्ण नहीं होती हैं। Watson ने मस्तिष्क को एक रहस्य बॉक्स (Mystery Box) कहा है। चूँकि Watson ने व्यवहारवाद में मन के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया है, इसलिए

Watson के मनोविज्ञान को मनरहित मनोविज्ञान - (Mindless Psychology) कहा जाता है।

इस तरह Watson ने व्यवहारवाद से सम्बन्धित उपर्युक्त प्रमुख विशेषताओं के आलोक में मनोविज्ञान के कुछ अन्य पहलुओं की व्याख्या की है जो निम्नांकित हैं :-

(1) भाषा विकास (Language Development):-

Watson ने बच्चों में भाषा विकास से सम्बन्धित अपने विचारों का विस्तृत वर्णन किया है। इनके अनुसार भाषा विकास बच्चों में स्वरोच्चारण (Vocalization) तथा तुतलाना से सीखा गया व्यवहार होता है। इस तरह के सीखने में अनुबंधन के नियम की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। जैसे- एक शिशु कई प्रकार के पदों जैसे- 'दा' 'बा' आदि को बोलता है। जब वह इन पदों को बोलता है और उसे सुनता है, तो उसे वह पुनः दोहराता है और इस तरह का शब्द उसके लिए एक अनुबंधित उद्दीपन हो जाता है जिसे बार-बार दुहराने के लिए वह प्रेरित होता है। इस तरह Watson ने अनुबंधन के नियम के आधार पर भाषा विकास की व्याख्या किया है।

(2) चिन्तन (Thinking):-

Watson ने चिन्तन को एक अस्पष्ट व्यवहार कहा है जो पेशियों, ग्रंथियों या अन्य स्वरों से निर्मित होता है। ऐसे व्यवहारों को प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन नहीं किया जाता है। जब बच्चा छोटा सा होता है तो वह अपने बड़ों से जोर-जोर से बोलना-पढ़ना सीखता है। लेकिन परिवार के सदस्य जोर-जोर से बोलने के लिए हतोत्साहित करते रहते हैं। क्रमशः धीरे-धीरे यह होता है कि अस्पष्ट वाणी मूक वाणी में बदल जाता है और उसके स्वर ग्रंथियों के

ਦੇ ਸੂਖਮ ਮਾਸਪੇਸ਼ੀਆਂ ਦੇ ਹਰਕਤਾਂ ਉਤਪੰਨ ਹੁੰਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਸਦੇ ਫਲ ਸਰੂਪ ਜਾਂ Sub-vocal talking ਦੀ ਉਤਪਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ Watson ਨੇ ਚਿੰਤਨ ਦੀ ਸੰਗਿਆ ਦਿੱਤੀ ਹੈ। ਬਾਦ ਚ Watson ਨੇ ਆਪਣੇ ਉਦਾਹਰਨਾਂ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਸਪਸ਼ਟ ਕੀਤਾ ਜਾਣ ਕਿ ਚਿੰਤਨ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਪੂਰੇ ਸਰੀਰ ਚ ਹਰਕਤਾਂ ਹੁੰਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।

(3) ~~[illegible]~~ ਵਾਟਸਨ ਦਾ ਵਾਤਾਵਰਣਵਾਦ (Watson's environmentalism):- Watson ਨੇ 1925 ਈ. ਚ 'Behaviourism' ਨਾਮਕ ਇਕ ਪੁਸਤਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕੀਤੀ ਜਿਸਨੂੰ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਮਨੁੱਖ ਪ੍ਰਕਿਰਤੀ ਦੇ ਅਧਿਐਨ ਚ ਪ੍ਰਯੋਗਾਤਮਕ ਜਾਂ ਵਸਤੂਨਿਸ਼ਠ ਤਰੀਕਿਆਂ ਅਤੇ ਵਾਤਾਵਰਣ ਕਾਰਕਾਂ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਸਵੀਕਾਰ ਕੀਤਾ। ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਵਿਵਹਾਰ ਚ ਵਾਤਾਵਰਣੀ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਕਾਫ਼ੀ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਦਾਅਵਾ ਕੀਤਾ ਕਿ ਪ੍ਰਤੇਕ ਸਧਾਰਨ ਮਾਨਵ ਸ਼ਿਸ਼ੂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਚ ਕੁਝ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅੰਤਰ-ਸ਼ਕਤੀ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਵਾਤਾਵਰਣ ਜਾਂ ਬਾਹਰੀ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਉਹ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜੋ ਵੱਡਾ ਹੋਕੇ ਸਰਜਨ ਵੀ ਬਣ ਸਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਡਾਕੂ ਵੀ ਬਣ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰਾਂ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਵਿਕਾਸ ਚ ਵਾਤਾਵਰਣ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਸਵੀਕਾਰ ਕੀਤਾ।

(4) ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ (Personality):-

Watson ਨੇ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਦੇ ਬਾਰੇ ਚ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਆਦਤ ਪ੍ਰਣਾਲੀਆਂ ਦਾ ਇਕ ਰੂਪ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿਸੇ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਉਸਦੀ ਜਨਮਜਾਤ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਤਥਾ ਭੌਤਿਕ ਏਵੰ ਸਮਾਜਿਕ ਵਾਤਾਵਰਣ ਤਥਾ ਉਸਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵਾਂ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਆਵਸ਼ਕ ਹੈ।

(5) ਸਿੱਖਣ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤ (Theory of learning):- Watson ਨੇ ਸਿੱਖਣ ਸਿਧਾਂਤ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ Thorndike ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਨਿਯਮ ਦੀ

पूर्णत: अस्वीकार कर दिया और कहा कि इनका अध्ययन वस्तुनिष्ठ रूप से संभव नहीं है। Watson ने व्यवहार के सभी सिद्धान्तों में बारम्बारता तथा नवीनता के नियम को सबसे अधिक महत्व माना है। इनका कहना है कि सीखने की प्रक्रिया पर इन दोनों नियमों का अधिक प्रभाव पड़ता है। Watson अनुकूलित अनुक्रिया को सीखने का एक प्रमुख साधन मानते थे। इन्होंने Pavlov के सीखने सम्बन्धी नियमों को आधार मानकर 1919 ई० में अधिगम को प्रयोगात्मक रूप से समझने लगा। लेकिन बाद में इन्होंने 1925 ई० में आदतों के निर्माण में अनुकूलित अनुक्रिया को पूर्णरूपेण सही नहीं माना।

इस तरह Watson ने व्यवहारवाद की स्थापना करके मनोविज्ञान में आमूल परिवर्तन लाने की कोशिश की क्योंकि इन्होंने मनुष्य के साथ-साथ पशुओं पर भी अध्ययन किया। जब इन्होंने व्यवहारवाद की स्थापना की तब उस समय बहुत सारे मनोवैज्ञानिक Watson की ओर आकर्षित हुए और इन्हें मनोविज्ञान का मसीहा मानने लगे। लेकिन बाद में मनोवैज्ञानिकों का इनसे मोहभंग होने लगा और बहुत सारे मनोवैज्ञानिकों ने इनकी कटु आलोचना करने लगे। Woodworth ने Watson की आलोचना करते हुए कहा है कि इन्होंने जीवन के व्यवहार को केवल क्रिया और वस्तुनिष्ठ अध्ययनों पर अधिक जोर दिया जिसके फलस्वरूप संवेदन एवं प्रत्यक्षीकरण के मानसिक साधनों की व्याख्या उपेक्षित हो गई। Watson ने अन्तर्निरीक्षण के स्थान पर शाब्दिक प्रतिवेदन विधि का प्रयोग किया जो एक प्रकार का अन्तर्निरीक्षण विधि ही थी। इस सम्बन्ध में व्यवहारवाद की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए Woodworth (1948) ने सही कहा — "We may conclude that

verbal report is not a behaviouristic method and that Watson's use of it is practically a confession of defeat for methodological behaviourism."

Watson के व्यवहारवाद की आलोचना इस आधार पर भी की गई है कि इन्होंने कुछ आन्तरिक प्रत्ययों जैसे- चिन्तन, इच्छा, अर्थ इत्यादि का व्यवहारवादी भाषा में बदलने की कोशिश की है। लेकिन ऐसे आत्मनिष्ठ प्रत्ययों के उपयोग से व्यवहारवाद की वस्तुनिष्ठता पर दिया गया बल कमजोर पड़ जाता है। इस संदर्भ में Heidbred (1961) ने भी व्यवहारवादियों द्वारा ऐसे आत्मनिष्ठ प्रत्ययों के उपयोग पर कहा कि इन शब्दों का केवल शाब्दिक अनुवाद है और ये सभी प्रत्यय वस्तुनिष्ठ नहीं माने जा सकते हैं।

Watson के पर्यावरण सम्बन्धी विचार की आलोचकों ने कटु आलोचना की है। आलोचकों का कहना है कि केवल पर्यावरण ही व्यवहारों का प्रमुख निर्धारक नहीं है क्योंकि व्यक्ति के व्यवहारों पर आनुवंशिक एवं मूलप्रवृत्यात्मक कारकों का भी प्रभाव पड़ता है।

इस तरह आलोचकों ने Watson के व्यवहारवाद की कटु आलोचना उनके कुछ विचारों के प्रति की गई। लेकिन इन आलोचनाओं के बावजूद भी Watson का एक प्रमुख योगदान मनोविज्ञान को वस्तुनिष्ठता प्रदान करने की है और आज भी ~~मनोविज्ञान~~ ~~के~~ मनोवैज्ञानिक मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में Watson के विचारों से प्रभावित होकर नए-नए अध्ययन कर रहे हैं।

— x — x —